July 7, 2019

प्रेरित काल का पाँचवा रविवार

लूकस 12 : 22 – 34

ख्रीस्त में मेरे प्यारे मसीही बहनों तथा भाइयों

आज माता कलीसिया प्रेरित काल के पाँचवे रविवार में प्रवेश करती है तथा हमारे मनन चिन्तन के लिए संत लूकस के सुसमाचार से अध्याय 12 पवित्र वचन 22 से लेकर 34 को रखती है। उत्पत्ति ग्रंथ के पहले अध्याय में ईश्वर द्वारा रचित सुंदर रचना का बखान किया गया है। इस सुंदर रचना में हम देखते है कि ईश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी की सृष्टि की, प्रकाश, जल, वायु, जीव–जंतुओं, पेड़–पौधों, पशु–पक्षियों आदि की सृष्टि की और यह सब उसे अच्छा लगा। अंततः ईश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की तथा उसे अपना प्रतिरुप बनाया। ईश्वर ने यह कह कर मनुष्य को आर्शीवाद दिया, "फलो–फूलो। पृथ्वी पर फैल जाओ और उसे अपने अधीन कर लो। समुद्र की मछलियों, आकाश के पक्षियों और पृथ्वी पर विचनरे वाले सब जीव–जन्तुओं पर शासन करो।"

आज के सुसमाचार एवं उत्पत्ति ग्रंथ के पहले अध्याय में हमें एक विरोधाभास देखने मिलता है। ईश्वर ने जहाँ एक ओर मनुष्य जाति को सब कुछ पर शासन करने का अधिकार दिया, सब कुछ को उसके अधीन बनाया वहीं दूसरी ओर प्रभु अपने शिष्यों से कहते हैं कि "चिंता मत करो–न अपने जीवन–निर्वाह की, कि हम क्या खायें और न अपने शरीर की, कि हम क्या पहनें।" आखिरकार मनुष्य को चिंता करने की ज़रुरत ही क्या है, ईश्वर ने जब, सब कुछ मनुष्य के अधीन बनाया है तो उसे कदापि चिंता करने की आवश्यकता नहीं क्योंकि इश्वर ने मानव को सृष्टि के समय ही सब कुछ भरपूर मात्रा में प्रदान किया था। लेकिन आज अनायस ही प्रभु येसु को कहना पड़ रहा है कि चिंता मत करो। प्रभु येसु के इन वचनों को हम संत मत्ती के सुसमाचार में भी अध्याय 6 पवित्र वचन 19 से लेकर 34 में पाते हैं।

मानव जीवन जिंदगी भर कुछ महत्वपूर्ण घटकों से घिरा रहता है जैसे यदि उसके जीवन में सुख है तो दुख भी होगा, हँसी है तो विलाप भी होगा, जीवन है तो मरण भी होगा। इन सभी घटकों में से सबसे महत्वपूर्ण घटक है "चिंता।" चिंता दो तरह की होती है। एक, जिससे हमारी मन की शांति छिन सकती है और दूसरी, जिससे फायदा हो सकता है। जब हमें हमारे अपनों के लिए चिंता होती है, तो सिर्फ सोचते ही नहीं रहना है, बल्कि कुछ करना भी चाहिए। पवित्र ग्रंथ से हम दोनों तरह की

चिताओं के बारे में जान सकते हैं। चिंता करना हमेशा गलत नहीं होता। कई बार जब हमें चिंता होती है, तो हम प्रार्थना करने के अलावा उसे दूर करने के लिए कुछ कदम भी उठाते हैं। सच तो यह है कि जब हमें दूसरों के लिए प्यार होगा, तो ज़रुर हमें उनकी चिंता होगी। और अगर हम दूसरों की चिंता नहीं करते, तो इससे यह ज़ाहिर होगा कि हमें उनकी कोई परवाह नहीं। जब हमें चिंता होती है, तब हमें कुछ भी अच्छा नहीं लगता, घबराहट सी होती है या फिर हम परेशान रहते हैं।

आज हम ऐसे समय में जी रहे हैं, जहाँ कब क्या हो जाये, कोई नहीं जानता । ऐसे में किसी को भी चिंता हो सकती है। उदाहरणतः एक परिवार में एक शिशु के जन्म लेने से ही परिवार में खुशी का माहौल तो रहता है साथ ही साथ यह चिंता घर कर जाती है और यही सोच बार–बार सताती है कि इसका लालन–पालन कैसे होगा। बड़ा होकर इसका क्या होगा? क्या वह अपने पैर पर खड़ा हो पायेगा या नहीं? क्या यह बालक प्रौढ़ होने पर अपने माता–पिता की देखभाल करेगा कि नही? वगैरह वगैरह। इसी प्रकार हमारा सारा जीवन इस प्रकार और कई अन्य प्रकार की चिंता में डूबा रहता है। किसी ने बिल्कुल सत्य कहा है चिंता चिता को जन्म देती है। अंततः चिंता हमारे जीवन का नाश कर देती है। जहाँ देखो वहाँ चिंता, किसी की पढ़ाई की चिंता तो किसी का व्यापार की चिंता। उसका सारा जीवन इसी व्यथा में गुज़र जाता है कि इस दुनिया या इस जीवन में उसका क्या होगा?

हमें अपने आप से यह प्रश्न करना होगा कि आखिरकार मानव में यह चिंता कहाँ से आया? उत्पत्ति ग्रंथ हमें इसका उत्तर देता है। जब तक हम ईश्वर के सान्निध्य में थे, उसके छत्र–छाया में थे हमें किसी भी प्रकार से कोई चिंता करने की ज़रुरत नहीं थी। लेकिन जिस घड़ी हमने अपने अहम् में पड़कर ईश्वरीय कृपा और शक्ति को ठुकराकर मानवीय शक्ति पर हद् से ज्यादा भरोसा करना प्रारंभ किया तब से मानव चिंता से ग्रसित हो गया। जीवन भर ईश्वर पर भरोसा करने वालों को और ईश्वर पर आस्था रखने वालों को कभी हताश या निराश होना नहीं पड़ेगा। सदियों पहले राजा दाऊद को भी एक चिंता सता रही थी। तब उसने लिखा "प्रभु कब तक? क्या तू मुझे सदा भुलाता रहेगा? कब तक तू मुझसे अपना मुख छिपाये रखेगा? कब तक मैं अपने मन में चिंता करता रहूँगा, अपने हृदय में प्रतिदिन दुख सहता रहूँगा? (स्तोत्र 13:2–3)" उसे किस बात की तसल्ली मिली? उसने अपने मन का सारा हाल परमेश्वर को सुनाया क्योंकि उसे यकीन था कि परमेश्वर उसे प्यार करता है और उसे सँभालेगा। आज हम भी ईश्वर को अपनी चिंताओं के बारे में बताकर अपने मन का बोझ हल्का कर सकते हैं। दरअसल वह चाहता है कि हम ऐसा करें। प्रभु कहते हैं कि आप अपनी सारी चिंतायें उस पर छोड़ दें,क्योंकि वह

आपकी सुधि लेता है। (1 पेत्रुस 5: 7)

जी हाँ प्रिय विश्वासियों आज प्रभु येसु भी हमसे यही कहना चाहते है कि जब इश्वर उन पक्षियों का ख्याल रखता है जो न तो बोते है न लुनते है, जिनके न भंडार है, न बखार । तो वह क्यों हमारी परवाह नहीं करेगा। यदि हम उसकी सबसे उत्तम सृष्टि हैं तो वह अवश्य ही हमारी देखभाल करेगा। इसलिये ईसा हमसे आह्वान करते है कि हम अपने विश्वास और आस्था को प्रभु पर रखें। इस घड़ी मुझे हिन्दी चलचित्र का एक सुंदर गीत याद आता है जिसके बोल हैं"जीवन तुमने दिया है सँभालोगे तुम, आशा हमें है विश्वास है, हर मुश्किल से विधाता निकालोगे तुम, जीवन तुमने दिया है सँभालोगे तुम"। आइये हम अपना सब कुछ उस ईश्वर पर वार दें जिसने हमें अपने प्रतिरुप बनाया है और अपनी सारी चिंतायें उस पर छोड़ दें। क्योंकि हमारे माँगने से पहले हमारी ज़रुरतों को जानता है और उसे हमारी परवाह है। अतः वह हमारी देखभाल करेगा बशर्ते हम पूर्णरुपेण उस पर विश्वास और भरोसा करें। आमेन।

Rev. Fr. Saul Toppo

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019